12.06 hrs.

QUESTION OF PRIVILEGE AGAINST (i) EDITOR, THE NATIONAL HERALD AND (ii) SHRI SOMJIBHAI DAMOR, M.P.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri K.P. Unnikrishnan had given a notice of question of privilege on the 14th August, 1978 against the Editor, *The National Herald*, New Delhi, for alleged "gross distortion and wilful misrepresentation" of certain proceedings of Lok Sabha of the 12th August, 1978, and casting "aspersions" on their "conduct as Members in the House" in a news report published in its issue dated the 13th August, 1978, under the caption "Major Tactical Reverse".

The Editor, *The National Herald*, who was asked to state what he might have to say in the matter, in his reply dated the 19th August, 1978, has stated *inter alia*, as follows:

> "Our reporter has explained that in his attempt to give the gist of the tumultuous proceedings of the day in an abbreviated form, unintentional errors had crept into the report. He has further stated that it was farthest from his mind while reporting the proceedings to misquote any member or misrepresent any party's view point. We express regret and offer our unqualified apology for the erroneous reporting and request that the notice of breach of privilege against *The National Herald* is not pressed."

In view of the regret and unqualified apology tendered by the Editor, *The National Herald*, if the House agrees, the matter need not be pursued. The Editor of *The National Herald*, may, however, be asked to publish the necessary correction and his apology prominently in the next issue of the newspaper.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Pandit D. N. Tiwari, M.P., Chairman, House Committee, had given a notice of question of privilege on 3rd August, 1978, against Shri Somjibhai Damor, M.P. for making certain unfounded allegations against him in the House on the 31st July, 1978 and also in a letter addressed by him (Shri Somjibhai Damor) to the Speaker on that date, regarding allotment of houses to the Members belonging to the Scheduled Tribes.

Shri Somjibhai Damor was requested to furnish his comments on the matter and either to substantiate the allegations made by him or to express regret. Shri Somjibhai Damor in his reply dated the 23rd August, 1978, has stated:

> "In this regard, I express my unqualified regrets to you and also to Chairman of the House Committee."

In view of the unqualified regrets expressed by Shri Somjibhai Damor, if the House agrees, the matter may be treated as closed.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

12.10 hrs.

MESSAGE FROM RAJYA SABHA

SECRETARY: Sir, I have to report the following message received from the Secretary-General of Rajya Sabha:—

> "In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha, at its sitting held on the 26th August, 1978, agreed without any amendment to the Delhi Police Bill, 1978, which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 24th August, 1978."

12.11 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED VIOLENT CLASHES INVOLVING NAVAL PERSONNEL, WORKERS OF HINDUSTAN SHIPYARD AND BUS WORKERS

श्री विजय कुमार मलहोत्रा (दक्षिण दिल्ली) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोकमहत्व के निम्नलिखित विषय की ओर गृह मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

> "विशाखापत्तनम में नौसेना कर्मचारियों तथा हिन्दुस्तान शिपयार्ड के कर्मचारियों और बस कर्मचारियों के बीच हुई हिंसक मुठभेड़, जिस में पांच व्यक्ति मारे गये, से उत्पन्न स्थिति का समाचार"।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री धनिक लाल मंडल) : महोदय, सरकार को विशाखापत्तनम में 26 और 27 अगस्त, 1978 को हुई अराजकता की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं जिनके परिणामस्वरूप तीन व्यक्तियों की जानें गईं, पर बहुत दुख हुआ है। सरकार इस विषय में राज्य प्राधिकारियों के साथ सम्पर्क बनाए हुए है।

26 अगस्त को काफी शाम को नौसेना के कर्मचारियों तथा हिन्दुस्तान शिपयार्ड के सिविलियन कामगारों, जो एक बस में यात्रा कर रहे थे, के बीच कहा सुनी हो गई। हिन्दुस्तान शिपयार्ड के अन्य

कामगारों को इसकी जानकारी हुई। बाद में जब बस वापस आ रही थी तो नौसेना के कर्मचारी बस के कंडक्टर को नौसेना के कार्यालय पर ले गए, उसे रोके रखा, और शिपयार्ड के उस कामगार को पहचानने के लिए कहा जिससे कहा-सुनी हुई थी। इस बीच सिटी बस के कामगारों को कंडक्टर की इस नजरबन्दी का पता चल गया और वे महालक्ष्मी थियेटर के निकट एकत्र हो गए और उन्होंने अपने साथी को बचाने के लिए नौसेना के कार्यलय में प्रवेश करने की कोशिश की परन्तु राज्य पुलिस ने उनको रोक दिया। बाद में नौसेना के कर्मचारियों ने कंडक्टर को पुलिस को सौंप दिया।

26 अगस्त को काफी शाम के समय नौसेना के कुछ कर्मचारियों तथा बस कामगारों और बाद में हिन्दुस्तान शिपयार्ड के कुछ कर्मचारियों में एक मुठभेड़ हुई। इसके परिणामस्वरूप अराजकता, हिंसा और आगजनी की कई घटनाएं हुई। शिपयार्ड के कामगारों, बस कंडक्टरों, जनता के कुछ व्यक्तियों तथा नौसेना के कर्मचारियों के बीच पथराव हुआ जिसमें कुछ असैनिक नागरिक, नौसेना कर्मचारी, तथा राज्य पुलिस के कर्मचारियों को भी चोटें आईं। घटना में एक सिटी बस और नौसेना के ट्रक को आग लगा दी गई। स्थिति पर काबू पा लिया गया।

27 अगस्त की सुबह को नौसेना के हाथ पैटी आफिसर श्री एन० बी० भट्ट, का शव पिछली रात की वारदातों के मौके के निकट मिला। जब उसकी मृत्यु का समाचार नौसेना कर्मचारियों को मिला तो उनमें से कुछ बहुत क्रोधित हो गए तथा अराजकता हिंसा तथा आगजनी फिर से नौसेना के कर्मचारियों, हिन्दुस्तान शिपयार्ड के कर्मचारियों तथा अन्य के बीच भड़क उठी। एक सिनेमाहाल, एक पूजा का स्थान, कुछ आवासीय मकानों तथा कुछ वाहनों को जला दिया गया। हिन्दुस्तान शिपयार्ड के एक कर्मचारी श्री कालीदास को गम्भीर चोटें आईं जिसके परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। एक और 19 वर्षीय लड़के (सिविलियन) की मृत्यु का भी समाचार मिला है।

स्थानीय प्रशासन ने प्रभावित क्षेत्रों में 27 अगस्त को शाम 5 बजे से कर्फ्यू लगा दिया है तथा तब से 28 अगस्त की शाम तक कोई घटनायें नहीं हुई हैं। मामान्य स्थिति पुनः स्थापित करने के लिए पुलिस, नौसेना तथा स्थानीय प्रशासन के प्रतिनिधियों की गतिविधियों में समन्वय करने के लिए एक संयुक्त नियंत्रणकक्ष की स्थापना की गई है। राज्य सरकार ने नगर में शांति और व्यवस्था बहाल करने के लिए आवश्यक उपाय किए हैं। नौसेना के प्राधिकारी भी शांति बहाल करने के लिए राज्य सरकार की सहायता करने के लिए उपाय कर रहे हैं।

मैं सदन से तथा सदन के माध्यम से विशाखापत्तनम के लोगों के सभी वर्गों से शांति और सद्भावना बनाये रखने तथा सामान्य स्थिति का वातावरण पुनः स्थापित करने के लिए हार्दिक अपील करूंगा।

श्री विजय कुमार मलहोत्रा : उपाध्यक्ष, महोदय विशाखापत्तनम के मलकापुरम् शिपयार्ड के क्षेत्र में जो हिंसक घटनाएं हुई हैं वे काफी दुखदायी हैं। उन घटनाओं में विशेष रूप से जिन लोगों की मृत्यु हुई हैं उन में एक विद्यार्थी है जो वहां पर शिपयार्ड में गैस्ट के रूप में आया हुआ था जिसका इस लड़ाई से और इन घटनाओं से कोई ताल्लुक नहीं था। एक नैवल आफिसर की लाश अगले दिन रात को झाड़ियों में प्राप्त हुई और तीसरे मरने वाले व्यक्ति का भी ऐसा लगता है कि घटनाओं से कोई ताल्लुक नहीं था। इस कारण से जो घटनाएं वहां पर घटी हैं उन में कुछ शरारती तत्व बाद में शामिल हुए, इस के बारे में कोई सन्देह दिखाई नहीं देता। इस के साथ जुड़े हुए जो दूसरे सवाल हैं उन की ओर मैं मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि यह कोई पैटर्न सिर्फ विशाखापतनम का हो ऐसी बात नहीं है, हैदराबाद में जो घटना हुई है, उस से पहले मराठवाड़ा में जो घटनाएं हुई और उस से पहले अन्य स्थानों पर भी जो हिंसक घटनाएं उमड़ रही हैं और तनाव पैदा हो रहा है इस के पीछे कोई पैटर्न है या नहीं, इस को देखने की जरूरत है। मैं यह तो नहीं कहता कि ये घटनाएं कोई प्री-मेडिटेटेड थीं या पहले से प्लान की हुई थीं। परन्तु एक छोटी सी घटना होती है, उस के बाद अचानक वह घटना बहुत उग्र रूप धारण कर लेती है। इस के बारे में यह जो एक साइकोलाजी बन गई है देश के अन्दर, इसको केन्द्रीय सरकार और प्रादेशिक सरकार इन सब को मिल कर के देखने और इस को रोकने की सख्त जरूरत है। अगर ऐसा न हुआ तो इस के कारण देश में यह जो वातावरण बनाया जा रहा है कि ला एण्ड आर्डर तहसनहस हो रहा है, कानून और व्यवस्था नहीं रह गई है इस के कारण बहुत ही बीभत्स रूप में पैदा हो रहा है। मैं चाहूंगा कि प्रधान मंत्री जी सभी मुख्य मंत्रियों के साथ बैठ कर इस पर विचार करें और इस को देखें कि इस में किसी तरह की राजनीति नहीं आनी चाहिए और इन सारे मामलों को किस तरह से हल किया जा सकता है। कुछ लोग ऐसे जरूर हैं जो यह चाहते हैं इस बात को साबित किया जाए और इस बात का बड़े जोर से प्रचार करने की कोशिश उन की तरफ से है कि एमरजेंसी के अन्दर ला एण्ड आर्डर की स्थिति बहुत ठीक थी, अच्छी थी और एमरजेंसी क्यों कि हट गई इस के कारण देश में हर रोज समाचारपत्रों में ऐसी खबरें आ रही हैं, परन्तु बहुत से ऐसे स्थान भी हैं जहां कांग्रेस का या कांग्रेस (आई) का शासन है, किसी जगह दूसरी प्रदेश सरकारों के शासन हैं तो उन सभी को मिला कर ला एन्ड आर्डर की प्राब्लम के लिए कोई सख्त कदम उठाने की जरूरत है। जैसा कि अभी यहां पर जिक्र किया गया कि दिल्ली के दो बच्चों का कत्ल कर दिया गया। इसमें एक बात निकलती है कि जो कानून तोड़ने वाले गुंडे और शरारती तत्व हैं उनके मन में कहीं इस प्रकार की भावना न आ जाये कि देश में ला एण्ड आर्डर की स्थिति कमजोर होती जा रही है

इसीलिए मैं इस बात पर बहुत बल देना चाहता

[श्री विजय कुमार मलहोत्रा]

हूं कि राष्ट्रीय स्तर पर इस सारे सवाल को देखना चाहिए। आज सभी प्रदेशों में इस तरह की घटनायें बढ़ रही हैं ।

दूसरी बात यह है कि यह जो घटना हुई है इसके सम्बन्ध में नैवी के वाइस एडमिरल, सुपरिन्टेंडेंड पुलिस और शिपयार्ड के प्रबन्धक–तीनों ने अलग अलग घटनायें बताई हैं । आज देश में बहुत जगहों पर बी एस एफ, सी आर पी, मिलिट्री, पब्लिक अंडरटेकिंग्ज स्थित है वहां पर इनमें तालमेल के लिए कोई ऐसी एथारिटी होनी चाहिए जोकि सबके साथ मिलकर काम कर सके और कहीं पर अगर किसी प्रकार की कठिनाई होती है, ,कोई तनातनी का वातावरण पैदा होदा है तो उसका निराकरण किया जा सके। ऐसी जगह जहां पर नैवी के सेंटर हैं सेंट्रल गवर्नमैंट और मिलिट्री के आफिस हैं उसके, सम्बन्ध में कोई ऐसा निर्णय होना चाहिए कि जिसके अन्डर में वे पूरी तरह से काम करेंगे । अगर कहीं पर कोई ऐसी स्थिति पैदा होती है तो उसके लिए कौन सी कामन एथारिटी होगी जो मिलकर सारे मामले को निपटा सके । अन्यथा तालमेल बनाने में समय लगता है । नेवी के कमाण्डर को और शिपयार्ड के प्रबन्धकों को अपने आदमियों को सम्हालने में 24 घंटे लगे । जो लोकल बस कर्मचारी थे उनको भी सम्हालने में समय लगा। इसलिए कोई ऐसी एथारिटी होनी चाहिए जो सभी को कन्ट्रोल कर सके, सभी का आपस में कांट्रैक्ट हो सके और एक दूसरे के विपरीत कोई काम न कर सके– इसको देखने की जरूरत है। इस मामले को देखने के लिए और आगे फ्यूचर के लिए कोई ऐसी इंक्वायरी वहां पर हो ताकि आगे कभी भी ऐसी घटनायें न घट सकें ।

श्री धनिक लाल मंडल : महोदय, जिन भावनाओं को व्यक्त किया गया है, मैं उनके साथ हूं । विधि और व्यवस्था को अपने हाथ में लेने का या हिंसा करने का जो भाव है उस पर काबू पाना चाहिए और उसके लिए माननीय सदस्यों ने जो सुझाव दिए हैं मुख्य मंत्रियों तथा विरोध पक्ष के नेताओं से मिकलर बात करने के लिए तो हम चाहते हैं ऐसा वातावरण होना चाहिए कि कहीं पर अगर कोई छोटी घटना हो तो उससे इस तरह की हिंसक वारदातें न बढ़ें । इस तरह का वातावरण हमें बनाना चाहिए ।

यहां पर जो घटना हुई है उसमें कोई पैटर्न है ऐसा तो नहीं दीख रहा है। आपस में कुछ कहा सुनी हो गई और उसके बाद बात बढ़ गई । स्थिति को काबू में लाने के लिए उपाय किए गए यद्यपि माननीय सदस्यों ने जैसा कहा कि और भी अच्छे उपाय किए जा सकतें थे ।

इंक्यावरी की जो बात माननीय सदस्य ने कही है तो एक मैजिस्ट्रीरियल इंक्वायरी का एलान राज्य सरकार ने किया है और अभी सबसे जरूरी बात तो यह है कि शांति और व्यवस्था स्थापित हो और आपस में सद्भाव पैदा हो । यह सबसे पहली आवश्यकता है । यह पहला काम हो जाता है तो बाद में राज्य सरकार से इस बारे में भी बातचीत की जा सकती है ।

SHRI JANARDHANA POOJARY (Mangalore): Growing violence in the public life of the country is a serious matter of concern. An atmosphere of violence and lawlessness has gripped the entire country.

You know our defence personnel and particularly, the Naval personnel are to safeguard the coast and also to safeguard public lives and property of the country. I have got high regard for our defence forces. But to-day what had happened in Vizag is this.

In fact, to-day, our naval personnel have taken the law into their own hands which is deplorable and no peace-loving citizens of this country can tolerate it. You know there are atrocities on harijans, weaker sections, poor workers, minorities and it has become the order of the day. What has happened in Vizag on the night of the 26th and how the incident has started. The Minister concerned has not given us a correct picture as to how the incident has started. The incident had srated in this way. Two naval personnel got into the bus in a drunken state, that is, under the influence of alcohol. Then, after entering the bus, some workers of the Hindustan Shipyard got into it. The poor chaps, the poor workers, simply crawled under the feet of the navy men. These navy personnel got angry and there was an altercation. Immediately these naval personnel started beating these workers. These workers got down from the bus; they went to the Shipyard and narrated the incident to their colleagues. The colleagues came back. When the bus was returning at the Naval Sena Dock these people waylaid the bus and removed the bus crew and took them to the workers' quarter of the shipyard and they confined them wrongfully.

At the time when the bus crew were in the quarters the bus crew got collected in strength and they demanded the release of their crew members. At that time there was a clash as a result of which a Petty Naval Officer was killed. In the meantime some naval officers were injured and 8 workers were also injured. Next day once agin the fighting erupted. The dead body of the petty naval officer was found by them near the bush in the naval colony. At that time these people went on a rampage and they took law into their own hands and even went to the extent of setting fire to the Cinema

Hall and also to the shipyard staff quarters. At that time what happened was this. In the clash one worker, by name, Kalidas was murdered and another nineteen year old boy was also murdered. When the naval people opened fire on the Gurdwara, at that time these people died. Not only that. Public property was also set on fire. This is the position. Can the Members of this honourable House join me in deprecating and deploring the acts of the naval personnel? What is happening to-day ? The atmosphere of violence and lawlessness had gripped the entire nation to-day. You heard what Mr. Sathe has just now stated. Now I will come to the main point. What is the reason?

MR. DEPUTY-SPEAKER : You should have come to the main point long before.

SHRI JANARDHANA POOJARY: Please excuse me. I will come to that.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You are making here a speech. Actually you should ask for a clarification. Please ask for the clarification.

SHRI JANARDHANA POOJARY: Please excuse me. Now why it is happening ? There is no fulfledged Home Minister in the country. For the last so many months we did not have two Cabient Ministers and six State Ministers. What is the Prime Minister doing? He is concentrating the powers to himself. He is not prepared to give the powers. That is why there is a bottleneck in the administration. That is why what I submit is this. Is the Prime Minister going to appoint a Home Minister in this country? There is no discipline in their party because there is crisis and there is no time for these people to find time for running the administration effectively. Under these circumstances, may I know from the Prime Minister when is he going to appoint the Home Minister for this country? (*Interruptions*)

Secondly, whether he is going to appoint a High Court judge to go into these allegations ?

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please conclude now.

SHRI JANARDHANA POOJARY: I am concluding. Sir, people in this country have started feeling that there is no safety for their lives today and as such, I request the Prime Minister to take immediate action, otherwise tomorrow your government will be thrown out by the people. (*Interruptions*)

श्री धनिक लाल मंडल : जो रिपोर्ट हमने दी है वह मान्ध्र सरकार द्वारा भेजी गयी है।

श्री उग्रसेन (देवरिया) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो घटना घटी है, वह बहुत ही शर्मनाक है। इस में भी कोई शक नहीं है कि जिस राज्य में यह घटना घटी, वहां की राज्य सरकार इस घटना को मूक दर्शक की तरह देखती रही। इस से उसकी कमजोरी प्रकट होती है।

मुझे तो इस सम्बन्ध में एक तार मिला है। यह तार राकोटी इश्वरम्मा का है जिसके पति राकोटी कालिदास पकड़ कर के ले जाये गये। वहां नेवल स्टाफ के द्वारा मारे गये और चीफ आफ नेवल कमाण्ड की हाजिरी में उनको पूरी तरह कुचल दिया गया। आज भी वहां पर इस तरह की अव्यवस्था की भावना है और लोग वहां कर्फ्यू लगा होने पर भी डर रहे हैं आया कि उनका जीवन सुरक्षित रह सकेगा या नही। यह जो तार हमारे पास आया है, मंत्री जी के पास भी पहुंचा होगा।

मैं अब दो-तीन सवाल करना चाहता हूं, क्योंकि जनार्दन पुजारी जी की तरह मैं फालतू लेक्चर देने के लिए तो खड़ा नहीं हुआ हूं। माननीय मंत्री जी ने अपने बयान में कहा है कि जब वे बस यात्रा कर रहे थे नवल आफिसर के कर्मचारी पकड़ कर के अपने यहां ले गए। क्या मंत्री जी मेरी राय से सहमत होंगे कि अगर वे बस कर्मचारियों को पकड़ कर के नहीं ले जाते कि बताओ कि किस से तुम्हारी कहा-सुनी हुई है तो उसकी पूरी प्रतिक्रिया नहीं हुई होती? मंत्री जी पहली बात तो यह बतायें कि सही मायनों में क्या वे इस नतीजे पर पहुंचे कि वे पिये हुए थे और बिना मुकाम तक पहुंचे रास्ते में ही मस्त हो गए थे और उन्होंने अपने अधिकारों का दुरुपयोग किया? क्या इसे मंत्री जी खुद अपने आप मानते हैं? दूसरे मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि 26.27,28,29 चार दिन हो गए इतनी बड़ी घटना को घटे, क्या आपने तुरन्त राज्य सरकार को आदेश दिया या राय दी कि हाई कोर्ट के जज के स्तर पर इस की न्यायिक जांच बिठायी जाए? अब भी इस में क्यों देर की जा रही है?

रोड वेज के, शिपयार्ड के और नौ सेना के कर्मचारी आपस में लड़ते हैं और इसके लिए मल्होत्रा जी ने भी कहा और मंत्री ने उसका जवाब भी दिया, इस सम्बन्ध में मुझे याद है कि जब हम लोग जेल में थे तो आगरा में भी मारा-मारी हुई थी और फौजी किसी को पकड़ के ले गए थे और उन्होंने पूरा आगरा शहर घेर लिया था। उस समय मोहतरमा का राज था या उनके पिताजी का राज था। हम लोग उस समय जेल में थे और हमने अखबारों में पढ़ा था। ऐसी घटनाएं जो अक्सर शहरों में हो जाया करती हैं। क्या मंत्री जी ऐसे शहरों में जहां पर कि पब्लिक अण्डरटेकिंगस के कर्मचारी और फौजी अधिकारी काम करते हैं, कोई लायजा आफिसस या कोआरडिनेशन कमेटी बनाने की व्यवस्था करेगी ताकि जब ऐसे मौके आ जाएं तो तुरन्त कार्यवाही की जाए क्योंकि विभाग के आदेशों से तो यह ठीक होने वाला नहीं है।

[श्री उग्रसैन]

अब मैं मंत्री जी से दो-तीन सवाल करना चाहता हूं।

हाई कोर्ट के जज की अध्यक्षता में जांच कमेटी बिठाने में राज्य सरकार को क्या कठिनाई है यह मैं आप से जानना चाहता हूं।

मैं यह भी जानना चाहता हूं कि कोआर्डिनेशन कमेटी क्यों नहीं बनाई जाती है? पब्लिक अंडरटेकिंग के, नेवी के कर्मचारी या दूसरे जो लोग वहां रहते हैं उनकी इस तरह कोआर्डिनेशन कमेटी क्यों नहीं बनाई गई है, यह भी मैं आप से जानना चाहता हूं।

नेवल आफिसर ईस्टर्न कमांड के सामने कालीदास को मारा गया, इस आशय का जो तार आया है, इसके बारे में आपके पास कोई जानकारी है और यदि है तो क्या आप वह सदन को देंगे?

श्री धनिक लाल मंडल : जांच का आदेश हो चुका है। जांच के बाद जो भी माननीय सदस्य कह रहे हैं उसकी जानकारी दे दी जाएगी (**व्यवधान**) माननीय सदस्य जो कुछ भी कह रहे हैं उसको मैं समझता हूं। उनका कहना है कि ज्युडिशल इन्क्वायरी होनी चाहिए। लेकिन हर बात में ज्युडिशल इनक्वारी हो यह जरूरी नहीं है। पहले मैजिस्टीरियल इनक्वायरी हो रही है। जैसा आपने कहा है पहली आवश्यकता—यह है कि वहां शांति व्यवस्था स्थापित हो, आपस में सद्भाव हो। इनक्वायरी को जाने के बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

रक्षा मंत्री (श्री जगजीवन राम) : अभी प्रातःकाल डिफेंस सैक्रेटरी को, नौसेना अध्यक्ष को, मैंने यह आदेश दिया है कि आंध्र सरकार से बात करके विशाखापत्तनम में बहुत शीघ्र सद्भावना कमेटी की स्थापना की जाए जो नौसेना के लोगों की, हिन्दुस्तान शिपयार्ड के लोगों की, बस, कर्मचारियों की और नागरिकों के नेताओं की हो जो सबसे पहले इन सब समुदायों में सद्भाव स्थापित करने का प्रयत्न करे और यह देखती रहे कि कोई तनाव हो तो उस वक्त उसके लिए कारगर कदम उठाए जाएं।

SHRI VASANT SATHE (Akola): I want to thank the Defence Minister for the very salutary measures which have been taken because this is a matter which cannot be treated either in an emotional manner or even lightly. It is a very sensitive issue. I can understand things when there are clashes between communities, civilians, in various fields; these incidents themselves are of serious nature. But it is altogether a different matter if there is clash between armed personnel and civilian personnel. That is the seriousness and that is why the delicacy also. I would not like to go into the details, it is no use doing that. The right thing for us to see now is only to see that the whole situation is brought under control and necessary atmosphere created.

I would like to say one thing. You have issued orders, as have appeared in the Press, asking the personnel to remain bound to barracks. One disturbing thing which came out in the newspapers was that the naval personnel could draw arms from the armoury on 27th morning. Sir, on the 26th this incident took place; curfew was imposed; everything was all right; everything was brought under control. Then it is reported that on 27th morning at 11 A.M. they could draw arms from the armoury. You know the seriousness of this because, if armed personnel could get arms from the armoury, then, it becomes a very dangerous thing: anything can happen. Therefore kindly go into this. There may be provocation or whatever it is. The whole committee will now go into it. We should see that in future no such incidents are repeated. There is need for some directions. I believe you will of course do it. But it is my humble suggestion that some strict direction must also be given that the officer concerned or Officer-commanding of the Area must see that these personnel have no access to the arms in the armoury. That must be done.

I hope, you will kindly consider it.

श्री जगजीवन राम : महोदय, मैं जानबूझ कर आज की स्थिति में यह कहना उचित नहीं समझता कि किन कारणों से यह घटना बढ़ गई, क्योंकि वह काम तो इनक्वायरी मैजिस्ट्रेट का होगा, उस को देखना है। यह बात सही है कि जब इस तरह की कमोशन (उत्तेजना) किसी स्थान पर हो जाती है तो नेवी के आर्मरीज आदि की सुरक्षा के लिये कुछ लोगों को आर्म्स (हथियार) दिये जाते हैं और यहां पर भी आर्म्स (हथियार) दिये गये हैं। जो हमें जानकारी मिली वहां के सिविल अधिकारियों ने कहा था कि नेवी के लोगों को सतर्क रहना चाहिये सम्भवत: उनकी सहायता हमको आवश्यक हो। लेकिन उस के बाद से यहां से यह आदेश दे दिया गया है कि जिन लोगों को हथियार नितांत आवश्यक नहीं हों उनके पास से हथियार ले लिये जायें, और ले लिये गये हैं।

SHRI SAMAR MUKHERJEE (Howrah): Sir, what about the question of relief to the families of those who have been killed? This is very important. I have already handed over the telegram which I have received from the wife of the killed person; she has asked for relief. These families must be given immediate relief.

SHRI JAGJIVAN RAM : I will see that some immediate relief is given to the families of all those who have fallen victim in this.